



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

VOLUME - 14 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2025



“भारतीय संस्कृति की जड़े और विकसित भारत 2047 में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भूमिका”

डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी

सह-प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,

माधव विश्वविद्यालय, आबूरोड, पिण्डवाड़ा, सिरौही, राजस्थान.

डॉ. आलोक जाखड़

सह-प्राध्यापक, माधव विश्वविद्यालय,

आबूरोड, पिण्डवाड़ा, सिरौही, राजस्थान.

शोध सारांश :-

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसकी जड़ें वेदों, उपनिषदों, दर्शन, योग, आयुर्वेद, कला और साहित्य में निहित हैं। समय के साथ आधुनिकता और वैश्वीकरण ने इस संस्कृति को चुनौतियों के सामने खड़ा किया है, जिनमें परंपराओं से दूरी भाषाओं का क्षरण और पाश्चात्य प्रभाव प्रमुख हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में यह विश्लेषण किया गया है कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की क्या भूमिका हो सकती है। इसमें यह



प्रतिपादित किया गया है कि शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनः समावेश, योग और आयुर्वेद का वैश्विक प्रसार, डिजिटल माध्यमों से सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से विश्व नेतृत्व – ये सभी प्रयास भारत को न केवल आर्थिक और तकनीकी दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी सशक्त बनाएंगे। इस प्रकार, सांस्कृतिक पुनर्जागरण भारत की आत्मा को पुनः जाग्रत कर, उसे 2047 तक एक विकसित और विश्वगुरु राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगा।

बीज शब्द :- भारतीय संस्कृति की जड़े , सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता, सत्याग्रह की अवधारणा , योग का वैश्विक महत्व, G20 में भारतीय संस्कृति की झलक.

प्रस्तावना :-

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और बहुआयामी संस्कृति है। यह केवल रीतिरिवाजों और परंपराओं तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू में इसका गहरा प्रभाव है। भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने पर, वर्ष 2047 तक, यह आवश्यक है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पुनः पहचानें और उनके माध्यम से विश्व पटल पर नई दिशा प्रस्तुत करें।

भारतीय संस्कृति की जड़े :-

1. **आध्यात्मिकता और धर्मनिरपेक्षता** – भारत की संस्कृति “वसुधैव कुटुम्बकम्” और “सर्वे भवन्तु सुखिनः” जैसे आदर्शों पर आधारित है।
2. **भाषाई और साहित्यिक परंपरा** :- संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में समृद्ध साहित्य।
3. **कला और स्थापत्य** :- अजंता-एलोरा की गुफाएँ, खजुराहो के मंदिर, मीनाक्षी अम्मन, और ताजमहल।
4. **संगीत और नृत्य** :- भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी जैसे शास्त्रीय नृत्य और लोकधुनें।
5. **सहिष्णुता और विविधता** :- विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच सहअस्तित्व की परंपरा।

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना -

भारत 2047 में केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक विकसित राष्ट्र होगा। यह विकास तभी सार्थक होगा जब तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के बीच भारतीय संस्कृति अपनी अस्मिता बनाए रखे।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता :-

1. पश्चिमी प्रभाव के बीच अपनी पहचान बनाए रखना।
2. भारतीय भाषाओं, साहित्य और लोककला को पुनर्जीवित करना।
3. युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ना।
4. वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति का नेतृत्व स्थापित करना।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भूमिका :-

1. राष्ट्रीय एकता का साधन – सांस्कृतिक चेतना भारत के विविध समाज को एक सूत्र में बाँधती है।
2. नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान – भौतिक प्रगति के साथ-साथ जीवन में संतुलन और मानवीय मूल्य।
3. पर्यटन और अर्थव्यवस्था में योगदान – संस्कृति आधारित उद्योग और कला भारत की आर्थिक शक्ति को बढ़ाएँगे।
4. विश्वगुरु भारत की स्थापना – योग, आयुर्वेद, ध्यान, अहिंसा जैसे संदेश विश्व को भारत से ही मिल सकते हैं।
5. नवाचार और परंपरा का समन्वय – विज्ञान और तकनीक के साथ भारतीय संस्कृति का तालमेल भविष्य को दिशा देगा।

गांधी जी का सत्याग्रह :-

महात्मा गांधी को "सत्य और अहिंसा का पुजारी" कहा जाता है। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में सत्याग्रह (सत्य आग्रह) को अपना प्रमुख हथियार बनाया। सत्याग्रह का अर्थ है—अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध बिना हिंसा के सत्य और नैतिक शक्ति के आधार पर संघर्ष करना।

सत्याग्रह की अवधारणा :-

महात्मा गांधी ने अपने जीवन को शुद्ध और अनुशासित बनाने के लिए व्रत (एकादश व्रत) का पालन करने का संकल्प लिया। ये व्रत उनके आत्मिक और नैतिक जीवन के आधार बने।

गांधी जी के 11 व्रत

1. अहिंसा (Non-Violence) – किसी भी प्राणी को हिंसा न पहुँचाना।
2. सत्य (Truth) – हमेशा सत्य बोलना और सत्य का पालन करना।
3. अस्तेय (Non-stealing) – चोरी न करना, अनुचित लाभ न लेना।
4. ब्रह्मचर्य (Celibacy/Chastity) – इंद्रियों पर नियंत्रण रखना।
5. अपरिग्रह (Non-possession) – अधिक भौतिक वस्तुओं का संग्रह न करना।
6. शरीर-श्रम (Physical labor) – अपने श्रम से जीवनयापन करना।
7. असंग्रह / स्वदेशी (Swadeshi) – स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग और विदेशी वस्तुओं का त्याग।
8. अभय (Fearlessness) – सत्य और न्याय के लिए निर्भीक रहना।
9. अस्पृश्यता निवारण (Removal of untouchability) – जाति, धर्म या छुआछूत का भेदभाव न करना।
10. समानता (Equality) – सभी मनुष्यों को समान मानना।
11. उपवास (Control of diet / fasting) – भोजन में संयम रखना और उपवास को आत्मशुद्धि का साधन बनाना।

महत्व :-

इन व्रतों ने गांधी जी को आध्यात्मिक बल और नैतिक शक्ति प्रदान की।

ये केवल उनके निजी जीवन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने इन्हें समाज सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन का भी आधार बनाया।

आज भी ये व्रत मानव जीवन में अनुशासन, शांति और आत्मबल के लिए आदर्श हैं।

गांधी जी के अनुसार, सत्याग्रह शत्रु को हराने का नहीं बल्कि उसे जीतने का माध्यम है।

सत्याग्रह की विशेषताएँ :-

1. सत्य और अहिंसा पर आधारित।

2. नैतिक शक्ति का प्रयोग, न कि शारीरिक बल।
3. शत्रु को शत्रु नहीं बल्कि भाई मानकर परिवर्तन का प्रयास।
4. जनता को राजनीतिक चेतना और साहस प्रदान करना।

प्रभाव :-

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा मिली।

विश्व स्तर पर गांधी जी की पहचान "महात्मा" के रूप में हुई।

अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप में भी सत्याग्रह की प्रेरणा से कई आंदोलन चले (जैसे मार्टिन लूथर किंग का आंदोलन)।

योग का वैश्विक महत्व :-

योग भारत की प्राचीनतम धरोहर है। संस्कृत शब्द "युज्" से निकला "योग" का अर्थ है –आत्मा और परमात्मा का मिलन, तथा शरीर, मन और आत्मा का संतुलन। पहले यह केवल भारत की परंपरा तक सीमित था, लेकिन आज इसका महत्व पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है।

योग का दार्शनिक आधार

योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक अनुशासन है।

पतंजलि के योगसूत्र में योग को “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” कहा गया है – अर्थात् चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित करना।

इसमें आठ अंग (अष्टांग योग) बताए गए हैं – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

योग का स्वास्थ्य पर प्रभाव :-

1. शारीरिक स्वास्थ्य – आसन और प्राणायाम शरीर को स्वस्थ, लचीला और ऊर्जावान बनाते हैं।
2. मानसिक शांति – ध्यान और प्राणायाम से तनाव, चिंता और अवसाद कम होता है।
3. रोग निवारण – हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा, और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों में लाभकारी।
4. जीवनशैली संतुलन – योग अनुशासित और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने में मदद करता है।

योग का वैश्विक प्रसार :-

स्वामी विवेकानंद ने 19वीं सदी में पश्चिम में योग का प्रचार किया।

आज दुनिया के लगभग हर देश में योग केंद्र और संस्थान स्थापित हैं।

2014 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को “अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस” घोषित किया।

अमेरिका, यूरोप, एशिया और अफ्रीका तक में लाखों लोग योग का अभ्यास करते हैं।

योग का सांस्कृतिक महत्व :-

योग भारत की संस्कृति और दर्शन का दूत है।

यह वैश्विक स्तर पर भारतीय आध्यात्मिकता और विज्ञान का प्रतीक बन चुका है।

योग से “वसुधैव कुटुंबकम्” की भावना को बल मिलता है।

G20 में भारतीय संस्कृति की झलक :-

भारत ने वर्ष 2023 में पहली बार G20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस अवसर पर भारत ने केवल अपनी राजनीतिक और आर्थिक शक्ति ही नहीं, बल्कि समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपरा को भी विश्व के सामने प्रस्तुत किया।

G20 और भारत का सांस्कृतिक संदेश

भारत ने इस सम्मेलन का थीम रखा –

“वसुधैव कुटुंबकम्” – एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य”

यह भारतीय संस्कृति की प्राचीन अवधारणा है, जो बताती है कि पूरा संसार एक परिवार है।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख झलकियाँ :-

1. स्थलों का चयन और सजावट :-

दिल्ली में भारत मंडपम और अन्य स्थलों पर भारतीय कला, स्थापत्य और शिल्पकला को प्रस्तुत किया गया।

कोणार्क चक्र, अशोक स्तंभ और कमल के फूल जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया गया।

2. भारतीय कला और संगीत :-

सम्मेलन में शास्त्रीय नृत्य (भरतनाट्यम, कथक), लोकनृत्य और शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियाँ हुईं।

भारत की विविधता और एकता को नृत्य-संगीत के माध्यम से दर्शाया गया।

3. भारतीय खान-पान :-

मेनू में मिलेट्स (श्रीअन्न), दाल, पराठा, और पारंपरिक मिठाइयाँ परोसी गईं।

मिलेट्स को “Shree Anna – Gift of India to the world” के रूप में प्रचारित किया गया।

4. हस्तकला और स्मृति चिन्ह :-

विदेशी मेहमानों को छत्तीसगढ़, कर्नाटक और अन्य राज्यों की हस्तशिल्प वस्तुएँ भेंट की गईं।

कशीदाकारी, मधुबनी पेंटिंग और बांस उत्पाद जैसी कलाएँ प्रदर्शित की गईं।

5. योग और आयुर्वेद :-

योग और आयुर्वेद की झलक भी दिखाई गई।

मेहमानों को वेलनेस और भारतीय जीवनशैली के महत्व से परिचित कराया गया।

वैश्विक प्रभाव :-

भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई ने सभी राष्ट्राध्यक्षों को प्रभावित किया।

भारत ने यह संदेश दिया कि “आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक धरोहर” दोनों मिलकर ही “नया भारत” बनाते हैं।

इससे भारत की सॉफ्ट पावर और अंतर्राष्ट्रीय पहचान और मजबूत हुई।

निष्कर्ष :-

भारत की सांस्कृतिक जड़े गहरी और अटूट हैं। विकसित भारत 2047 की परिकल्पना तभी पूर्ण होगी जब तकनीकी व आर्थिक शक्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी हो। भारतीय संस्कृति ही वह आधार है जो आने वाली पीढ़ियों को न केवल भारतीय बनाए रखेगी बल्कि विश्व को भी मार्गदर्शन प्रदान करेगी। गांधी जी का सत्याग्रह केवल राजनीतिक हथियार नहीं था, बल्कि जीवन जीने का एक दर्शन था। उन्होंने दिखाया कि अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध बिना हिंसा के भी बड़ी से बड़ी सत्ता को झुकाया जा सकता है। आज भी सत्याग्रह सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों के लिए प्रेरणास्रोत है। योग का महत्व अब केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक वैश्विक आंदोलन बन चुका है। यह मानवता को स्वास्थ्य, शांति और एकता की राह दिखाता है। यदि योग को जीवन का हिस्सा बना लिया जाए, तो न केवल व्यक्ति बल्कि पूरा विश्व स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकता है। G20 शिखर सम्मेलन भारत के लिए केवल एक राजनीतिक आयोजन नहीं था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की झलक दिखाने का वैश्विक मंच बना। “वसुधैव कुटुंबकम्” के आदर्श के साथ भारत ने दुनिया को अपनी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानवीय धरोहर से परिचित कराया।

संदर्भ :-

1. Nehru, J. (1946). The discovery of India. Oxford University Press.
2. राधाकृष्णन, एस. (1956). ‘भारतीय संस्कृति के स्वरूप और साधना. दिल्ली: राजपाल एंड सन्स.
3. Radhakrishnan, S. (1923). Indian philosophy’ (Vols. 1–2). George Allen & Unwin.
4. दिनकर, आर. एस . (1950). भारतीय संस्कृति और आधुनिकता. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
5. गुप्ता, शिवकुमार,(2009) भारतीय संस्कृति के मूलाधार. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
6. Ministry of Culture, Government of India. (2023). Annual report. Retrieved from <https://indiaculture.gov.in>
7. <https://hi.wikipedia.org/wiki/>
8. <https://www.drishtiiias.com/hindi/model-essays/unique-form-of-indian-culture>